सामाजिक नीति के विभिन्न मॉडल तथा भारतीय स्थिति में उनकी प्रासंगिकता (उपयोगिता)

परिचय

सामाजिक नीति (Social Policy) वह नीति है जिसके माध्यम से सरकार समाज के सभी वर्गों, विशेषकर गरीब, कमजोर एवं वंचित वर्गों के कल्याण, सामाजिक न्याय तथा समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाती है। सामाजिक नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न देशों में अलग-अलग मॉडल (Models) अपनाए गए हैं। प्रत्येक मॉडल अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ के अनुसार कार्य करता है।

सामाजिक नीति के प्रमुख मॉडल

1. अवशिष्ट मॉडल (Residual Model)

अर्थ

इस मॉडल के अनुसार व्यक्ति और परिवार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करें। जब वे ऐसा करने में असफल हों, तभी राज्य सहायता प्रदान करे। इसमें सरकार की भूमिका सीमित होती है।

विशेषताएँ

सरकार का सीमित हस्तक्षेप।

परिवार एवं निजी संस्थाओं की प्रमुख भूमिका।

केवल जरूरतमंदों को सहायता।

अस्थायी सामाजिक सुरक्षा।

लाभ

सरकारी व्यय कम होता है।

आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है।

निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ती है।

सीमाएँ

गरीब एवं कमजोर वर्ग उपेक्षित रह सकते हैं।

सामाजिक असमानता बढ़ सकती है।

सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा का अभाव।

2. संस्थागत अथवा कल्याणकारी मॉडल (Institutional / Welfare Model)

अर्थ

इस मॉडल में सामाजिक कल्याण को प्रत्येक नागरिक का अधिकार माना जाता है। सरकार सभी नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराती है।

विशेषताएँ

सार्वभौमिक सामाजिक सेवाएँ।

राज्य की सक्रिय भूमिका।

समान अवसर एवं सामाजिक न्याय।

मानव विकास पर विशेष बल।

लाभ

गरीबी एवं असमानता में कमी।

सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित।

जीवन स्तर में सुधार।

सीमाएँ

सरकार पर अधिक आर्थिक भार।

योजनाओं के संचालन में कठिनाई।

संसाधनों की अधिक आवश्यकता।

3. विकासात्मक मॉडल (Developmental Model)

अर्थ

इस मॉडल का उद्देश्य केवल सहायता देना नहीं, बल्कि लोगों को आत्मनिर्भर बनाना एवं विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाना है।

विशेषताएँ

रोजगार सृजन।

शिक्षा एवं कौशल विकास।

सामुदायिक सहभागिता।

मानव संसाधन विकास।

लाभ

स्थायी विकास।

आत्मनिर्भरता में वृद्धि।

गरीबी उन्मूलन में सहायता।

सीमाएँ

परिणाम प्राप्त होने में समय लगता है।

प्रभावी योजना एवं प्रबंधन की आवश्यकता।

पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की जरूरत।

4. पुनर्वितरण मॉडल (Redistributive Model)

अर्थ

इस मॉडल का उद्देश्य समाज में आय, संपत्ति एवं अवसरों का न्यायपूर्ण वितरण करना है ताकि सामाजिक एवं आर्थिक असमानता कम हो सके।

विशेषताएँ

सामाजिक न्याय पर बल।

गरीब एवं वंचित वर्गों को प्राथमिकता।

प्रगतिशील कर प्रणाली।

कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार।

लाभ

आर्थिक विषमता कम होती है।

सामाजिक समानता बढ़ती है।

कमजोर वर्गों का जीवन स्तर सुधरता है।

सीमाएँ

उच्च आय वर्ग का विरोध हो सकता है।

सरकारी व्यय बढ़ता है।

संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन आवश्यक।

5. लोकतांत्रिक समाजवादी मॉडल (Democratic Socialist Model)

अर्थ

इस मॉडल में लोकतंत्र एवं समाजवाद के सिद्धांतों का समन्वय होता है। राज्य आर्थिक विकास के साथ सामाजिक न्याय एवं कल्याण सुनिश्चित करता है।

विशेषताएँ

लोकतांत्रिक व्यवस्था।

सामाजिक न्याय।

सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र दोनों की भूमिका।

समान अवसर एवं सामाजिक सुरक्षा।

लाभ

संतुलित विकास।

लोकतांत्रिक भागीदारी।

सामाजिक एवं आर्थिक समानता।

सीमाएँ

योजनाओं के क्रियान्वयन में विलंब।

प्रशासनिक जटिलताएँ।

संसाधनों का दबाव।

भारतीय स्थिति में इन मॉडलों की प्रासंगिकता (उपयोगिता)

भारत एक लोकतांत्रिक, समाजवादी एवं कल्याणकारी राज्य है। इसलिए भारत में किसी एक मॉडल को पूर्ण रूप से नहीं अपनाया गया है, बल्कि विभिन्न मॉडलों का समन्वित उपयोग किया गया है।

भारत में प्रमुख विशेषताएँ

1. संस्थागत मॉडल के अंतर्गत सभी नागरिकों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा की योजनाएँ।

2. विकासात्मक मॉडल के अंतर्गत कौशल विकास, ग्रामीण विकास एवं रोजगार कार्यक्रम।

3. पुनर्वितरण मॉडल के माध्यम से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाओं एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए विशेष योजनाएँ।

4. लोकतांत्रिक समाजवादी मॉडल के अनुसार संविधान में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय का प्रावधान।

5. कुछ क्षेत्रों में अवशिष्ट मॉडल के अनुसार केवल अत्यंत जरूरतमंदों को लक्षित सहायता प्रदान की जाती है।

भारतीय सामाजिक नीति के प्रमुख उदाहरण

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA)

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम

आयुष्मान भारत

राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP)

समेकित बाल विकास सेवा (ICDS)

इन योजनाओं का उद्देश्य सामाजिक न्याय, समान अवसर, गरीबी उन्मूलन तथा समावेशी विकास सुनिश्चित करना है।

निष्कर्ष

सामाजिक नीति के विभिन्न मॉडल समाज की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुए हैं। भारत ने लोकतांत्रिक समाजवादी, विकासात्मक, संस्थागत तथा पुनर्वितरण मॉडल के तत्वों को अपनाकर एक मिश्रित सामाजिक नीति विकसित की है। वर्तमान समय में समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, समान अवसर एवं सतत विकास के लिए इन मॉडलों का संतुलित एवं समन्वित उपयोग अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. Friedlander, Walter A. (1977). Concepts and Methods of Social Work. Prentice Hall of India.

2. Titmuss, Richard M. (1974). Social Policy: An Introduction. George Allen & Unwin.

3. Kulkarni, P. D. (1979). Social Policy and Social Development in India. Association of Schools of Social Work in India.

4. Dubey, S. N. (2015). Social Work: An Integrated Approach. New Royal Book Company.

5. गोयल, एस. एल. एवं गोयल, राकेश. (2018). सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक नीति. आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।

6. सिंह, आर. बी. एस. (2016). समाज कार्य एवं सामाजिक नीति. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।